|  |
| --- |
| 01. November 2025 |
| **Allerheiligen C** |
| Erste Lesung: Offb 7, 2-4.9-14; Zweite Lesung: 1 Joh 3, 1-3; Evangelium: Mt 5, 1-12a |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 542, 1+6 | Ihr Freunde Gottes allzugleich |
|  | GL 548, 1-5 | Für alle Heilgen  |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr, Jesus, du rufst die Menschen |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 715 | Es jubelt aller Engelchor |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 24 (23), 1-6 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 653, 3 | Selig, die bei dir wohnen, Herr |
|  | oder |  |
|  | GL 479, 1-3 | Eine große Stadt ersteht |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Kommt alle zu mir,* |
|  | *die ihr euch plagt und schwere Lasten zu tragen habt.* |
|  | *Ich werde euch Ruhe verschaffen.* |
|  |  |
| Credo: | GL 354 | Gott ist dreifaltig einer |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 543, 1-4 | Wohl denen, die da wandeln |
|  | GL 458 | Selig seid ihr |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 808, 8 | Guter Hirt |
|  | GL 805, 2+3 | Stimmt an |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 389, 1-5 | Dass du mich einstimmen lässt |
|  | GL 773, 1+5+6 | Dich, König, loben wir an |
|  | GL 777, 1+3+8 | Kommt, lasst uns aus der Seele |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 380, 1+4+8 | Großer Gott, wir loben dich |